राष्ट्रीय संसाधन केंद्र

हिंदी विषय में उच्च शिक्षा संकाय के लिए
शिक्षण में वार्षिक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (अर्पित) 2019
[Annual Refresher Programme in Teaching (ARPIT) 2019]

रीतिकालीन हिंदी साहित्य

पाठ शीर्षक :	**केशवदास की काव्यकला**
पाठ लेखक :	**डॉ. विष्णुकांत शुक्ल,** पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर। संपर्क : 9027338096
पाठ समीक्षकः	1. प्रो. प्रीति सागर, हिंदी एवं तुलनात्मक विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 2. डॉ. उमेश कुमार सिंह, हिंदी एवं तुलनात्मक विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
समन्वयक	प्रो. अवधेश कुमार, हिंदी एवं तुलनात्मक विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
सहसमन्वयक	डॉ. रामानुज अस्थाना, हिंदी एवं तुलनात्मक विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

पाठ का उद्देश्य :

1. रीतिकालीन आचार्य कवि केशव से परिचित होना।
2. महाकवि केशव की काव्यकला को समझना।
3. आचार्य केशवदास के कृतित्व से परिचय।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कवि केशव को भक्तिकाल के फुटकल खाते में रखा है। न वे भक्तिकाल में बैठते हैं, न रीतिकाल में। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार आचार्य केशव 'रीतिकाल का प्रवर्तक' कहलाने के सहज अधिकारी कहे जा सकते हैं। विज्ञानों का अनुमान है कि इनका जन्म 1560 ईसवी के आसपास और मृत्यु 1601 ईसवी के लगभग हुई थी। इनके विषय में ज्ञातव्य है कि ये राजा प्रतापरुद्र के आश्रित सनाढ्य ब्राह्मण पंडित कृष्णदत्त के पौत्र और राजा मधुकर शाह से सम्मानित पंडित काशीनाथ के पुत्र थे तथा ओरछा नरेश महाराज इन्द्रसिंह इन्हें अपने गुरु के रूप में सम्मान देते थे। इन्द्रजीत के बड़े भाई महाराज रामसिंह इन्हें मंत्री और मित्र के रूप में मानते थे।

रचनाएँ

इनके द्वारा रचित ग्रन्थ हैं:– 'रसिकप्रिया' (1591) 'रामचन्द्रिका' (1601) 'कविप्रिया'(1601) 'रतनबावनी'(1607 ई.के लगभग) 'वीरसिंह देवचरित' (1607) 'विज्ञानगीता'(1601) 'जहाँगीर जसचन्द्रिका' (1612) 'नखशिख' और 'छन्दमाला'। इनमें 'रसिकप्रिया' 'कविप्रिया' और 'छन्दमाला'– रीतिग्रन्थ हैं जिनमें क्रमशः नवरस, अलंकारों और छन्दों का निरूपण किया गया है। 'रामचन्द्रिका' में रामकथा का प्रबंधात्मक वर्णन है; 'रतनबावनी', 'वीरसिंहदेवचरित' और 'जहाँगीर जसचन्द्रिका' आश्रय दाताओं की प्रशस्तिविषयक है; 'विज्ञानगीता' में प्रतीक शैली में आध्यात्मिक विषय को प्रस्तुत किया गया है तथा 'नखशिख' में परम्परागत उपमानों की सहायता से राधा के विभिन्न अंगों का वर्णन हुआ है।

केशव की भाषा

केशव की पारिवारिक भाषा संस्कृत रही है। अतः संस्कृत के तत्सम शब्द प्रभूत मात्रा में इनके काव्य में उपलब्ध हैं। स्वलीलया, निजेच्छया, लीलयैव, दिवि, विमानीकृत, अदीयमान, विचारमान, तत्तत्कार्य समग्रव्यग्र, नानादेश समागता नृपगणा पूज्यापरा सर्वत्र, अनेकधा, स्वाहा, साष्टांग, श्लोक, सुभगा, कुलकन्या, मनोहारिणी, रथाग्र, श्रीसूर्यमंडलविडंबन, जीमूत, पलाशमालाकुसुमालिमध्ये, पयोदेवता, आरक्तपत्रा, गणेशभालस्थलचन्द्ररेखा, वृन्दारकवृन्दाभिवन्दनीयम् चंचरीकायते आदि।

(रामचन्द्रिका)

बुन्देलखण्डी शब्द (स्यों, समदौं, बोर्उ, गेंडुआ, गुलसुई गौर मदाइन, उपदि, आदि) अवधी शब्द (रिझाउ, समुझि, लीन, लीन आदि), विदेशी शब्द (बकसीस, आलम, फरमान आदि) गढ़े, निरर्थक (बालकता, घालकता आदि) द्रष्टव्य हैं। लोकोक्ति एवं मुहावरों का सफल प्रयोग केशव के भाषा ज्ञान का प्रमाण है। भाव एवं प्रसंगानुकूल भाषा के प्रयोग में केशव सिद्धहस्त हैं। माधुर्य, ओज एवं प्रसाद सभी गुण यथावसर दीखते हैं। ओज का एक उदाहरण (रामचन्द्रिका, धनुर्भंग प्रकरण) द्रष्टव्य हैं।

''प्रथम टंकोर झुकि झारि संसार मद
चंड कोदंड रह्यो मंडि नव खंड को ।

चालि अचला अचल घालि दिगपाल बल
पालि ऋषिराज के बचन परचंड को।
सोधु दै ईश को बोधु जगदीशु को
क्रोध उपजाय भृगुनंद बरिबंड को
बाधि बर स्वर्ग को साधि अपबर्ग धनु–
भंगे को शब्द गयो भेदि ब्रह्मंड को।।''

भाषा में शब्दशक्तियाँ, लोक के प्रयोग, प्रशंसनीय हैं। कहीं–कहीं च्युतसंस्कृति, अक्रमत्व, अधिकपदत्व, न्यूनपदत्व, आदि दोष आ गये हैं। उनका उल्लेख यहाँ अपेक्षित नहीं है। (जिज्ञासु मूलग्रंथ के अध्ययन के अवसर पर इन से परिचित हो सकते हैं।)

केशव की संवाद योजना

केशव दरबारी कवि थे। वहाँ की वाक्पटुता, देशकालज्ञता से प्रतिदिन प्रभावित होना स्वाभाविक है। अतः 'रामचन्द्रिका' के संवाद व्यक्ति के चरित्र के अनुसार ही दिखाये गये हैं। 'दशरथ–विश्वामित्र, सुमति–विमति रावण–बाणासुर, जनक–विश्वामित्र, परशुराम–वामदेव, परशुराम–राम, कौशल्या–भरत, कैकेयी–भरत, राम–जानकी, राम–लक्ष्मण, रावण–अंगद, सीता–रावण, सीता–हनुमान, रावण–हनुमान, लव–कुश–भरत, लवकुश–विभीषण संवाद प्रमुख हैं। कुछ आकार में छोटे हैं कुछ बड़े भी।

इन संवादों में कथानक की गति, स्वाभाविकता, वाग्वैदग्ध्य, पात्र के चरित्र का अंकन, भावानुकूलता, सरलता एवं नाटकीयता आदि गुण स्वभावतः आर्य हैं। रावण–अंगद संवाद का एक उदाहरण ही पर्याप्त है: –

''कौन के सुत?'' बालिके, वह कौन बालि? न जानिये
काँख चाँपि तुम्हें जो सागर सात न्हात बरखानिये।
''है कहाँ वह?'' (वीर अंगद देवलोक बताइयो)
''क्यों गयो?'' रघुनाथ बान विमान बैठि सिधाइयो।

अलंकार विधान

'काव्य शोभा में अभिवृद्धि कारक धर्म अलंकार है। केशव की अलंकार योजना को दो भागों मे विभाजित किया जा सकता है– चमत्कार प्रधान एवं भावानुगामिनी अलंकार योजना। चमत्कार प्रधान योजना में श्लेष, यमक आदि का प्राधान्य है। चूँकि केशव को संस्कृत भाषा एवं काव्य परिवार में परम्परा से प्राप्त है, इसीलिए ऐसे स्थलों पर संस्कृतानभिज्ञ लोगों ने केशव को कठिन काव्य का प्रेत, हृदयहीन आदि कह कर अपनी असमर्थता को बचाने का प्रयास किया है। श्लेष की कितने ही स्थलों पर विच्छित्ति हृदयग्राहिणी हुई है। उदाहरणार्थ :–

''ति न नगरी तिन नागरी प्रतिपद हंसक हीन।
जलज हार सोभित न जहँ प्रगट पयोधर पीन।।''

(रामचन्द्रिका 5/16)

यहाँ प्रतिपद हंसक, जलज, पयोधर में श्लेष के द्वारा अर्थगाम्भीर्य समझा जाना चाहिए। कालिका एवं वर्षा का यह श्लिष्ट वर्णन देखिए :–

''भौं हैं सुरचाप चारु प्रमुदित पयोधर
भूखनजरायजोति तड़ित रलाई है।
दूरि कारि सुख मुख सुखमा ससी की नैन
अमल कमल दल दलित निकाई है।
केसौदास प्रबल करेनुका गमन हर
मुकुत सुहंसक सबद सुखदाई है।
अम्बर बालित मांति मोहै नीलकंठ जू की
कालिका कि बरसा हरषि हिय आई है।

(रामचन्द्रिका 13/16)

इस छन्द में रूपक, प्रतीप, उत्प्रेक्षा एवं सन्देह का समुचित सौन्दर्य द्रष्टव्य है। श्लेष के माध्यम से दो–तीन–चार एवं पाँच अर्थ प्रस्तुत कर केशव ने अपने पाण्डित्य का प्रमाण प्रस्तुत किया है। 'कविप्रिया' में ऐसे श्लिष्ट वर्णन बहुत रमणीय बन पड़े हैं। 'नैषधीयचरितम्' की 'पंचनली' प्रसिद्ध है, उसी को आधार मान कर पाँच अर्थों वाले इस कवित्त की रचना की गयी प्रतीत होती है:

''भावत परम हंस जात गुन सुनि सुख
पावत संगीत मीत बिबुध बखानियै।
सुखद सकतिधर समरसनेही बहु
बदन बिदित जस केसौदास गानियै।
राजै द्विजराज पद भूषन बिमल कम
लासन प्रकास परदार प्रिय मानियै।
ऐसे लोकनाथ की त्रिलोकनाथ नाथनाथ
कैधौं जगनाथ रामनाथ जग जानियै।''
(कविप्रिया)

सन्देह एवं उत्प्रेक्षा से परिपुष्ट उल्लेख का यह उदाहरण प्रसिद्ध हैः–

''अरुन गात अति प्रात पद्मिनी प्राणनाथ भय,
मानहुँ केशवदास कोकनद कोक प्रेममय।
परिपूरण सिन्दूर पूर कैधौं मंगल घट
किधौं शक्र को छत्र मद्यो माणिक मयूख पट।
कै श्रोणित कलित कपाल यह किल कापालिक काल को।
यह ललित लाल कैधों लसत दिग्भामिनि के भाल को।।''
(रामचन्द्रिका 5/10)

(अनुप्रास को अत्यन्त स्पष्ट होने के कारण उल्लिखित नहीं किया है)

विरोधाभास

''विषमय यह गोदावरी अमृत के फल देति।
केशव जीवन हार को, दुख अशेष हरि लेति।।''

(विरोधाभास में पहले विरोध होना चाहिए तदनन्तर उसका परिहार। इसके मूल में भी श्लेष रहता है। यहाँ विष का आपाततः अर्थ तो जहर ही लिया जा रहा है, पर विष से अमृत का फल असंभव है, यह विरोध है, परिहार करने के लिए विष का अर्थ 'जल' ग्रहण किया गया है, इसी प्रकार 'जीवन' भी समझना चाहिए।)

यथासंख्य

''कलहंस कलानिधि खंजन कंज कछू दिन केशव देखि जिये।
गति आनन लोचन पायन के अनुरूपक से मन मानि लिये।
यह काल कराल ते शोधि सबै हठि कै बरसा मिस दूर किये।
अबधौं बिनु प्राण प्रिया रहि हैं कहि कौन हितू अवलंबि हिये।।''

(रामचन्द्रिका 13/22)

विभावना :– ''यद्यपि ईंधन जरि गये अरि गण केसवदास।
तदपि प्रतापानलन के पल पल बढ़त प्रकास।।''

रूपक ''चढ़यौ गगन तरु धाय दिनकर बानर अरुन मुख।
कीन्हों झुकि झहराय सकल तारका कुसुम बिन।।''

(रामचन्द्रिका. 05/13)

अपह्नुति

''बानर न जानु सुर जानु सुभगाथ हैं।
मानुष न जानु रघुनाथ जगनाथ हैं।''

(रामचन्द्रिका. 18/11)

परिसंख्या

''मूलन ही की जहाँ अधोगति केशव गाइय।
होम हुतासन धूम नगर एकै मलिनाइय।
दुर्गति दुर्गन ही जु कुटिल गति सरितन ही मैं।
श्रीफल को अभिलाष प्रगट कवि कुल के जी मैं।
अति चंचल जहँ चलदलै विधवा बनी न नारि।
मन मोह्यो ऋषिराज को अद्भुत नगर निहारि।।

(रामचन्द्रिका. 1/48, 49)

अनुप्रास , उपमा, यमक, आदि प्रमुख शब्दालंकार एवं अर्थालंकारों का यथास्थान प्रयोग केशव के काव्यों में देखा जा सकता है। यहाँ मुख्य अलंकारों की चर्चा मात्र की गयी है।

केशव की छन्द योजना

छन्द काव्य को लय और गति प्रदान करने के कारण आदिकाल से ही कवियों का प्रिय रहा है। भारतीय परम्परा में मात्रिक वर्णिक भेद से तो छन्द के दो रूप सुप्रसिद्ध है, एक तीसरा रूप भी है अक्षर। आचार्य केशव ने तीनों प्रकर के छन्दों में काव्य रचना की है।

डॉ. हीरालाल दीक्षित ने 'रामचंन्द्रिका' में प्रयुक्त मात्रिक एवं वर्णिक की सूचना इस प्रकार दी हैः–

मात्रिक छन्दों की कुल संख्या 24 है :–

दाहा, रोला धत्ता, छप्पय पज्झटिका, अरिल्ल, पादाकुलक, त्रिभंगी, सोरठा, कुंडलिया, सवैया, गीतिका, डिल्ला, मधुभार, मोहन, विजया, शोभन, सुखदा, हीरा, पदमावती, हरिगीतिका, चौबोला, हरिप्रिया तथा रूपमाला।

वर्णिक छन्दों की कुलसंख्या 58 हैः–

श्री, सार, दंडक, तरणिजा, सोमराजी, कुमारललिता, नगस्वरूपिणी, हंस, समानिका, नराच, विशेषक, चंचला, शशिवदना, शार्दूलविक्रीडित, चंचरी, मल्ली, विजोहा, तुरंगम, कमला, संयुक्ता, मोदक, तारक, कलहंस, स्वागता, मोहनक, अनुकूला, भुजंगप्रयात, तामरस, मत्तगयंद, मालिनी, चामर, चन्द्रकला, किरीट सवैया, मदिरा सवैया, सुन्दरी, तन्वी, सुमुखी कुसुम विचित्रा, वसन्ततिलका, मोतियदाम, सारवती, त्वरितगति, द्रुतविलंबित, चित्रपदा, मत्तमातंग लीलाकरण दंडक, अनंग शेखर दंडक, दुर्मिल सवैया, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, रथोद्धता, चन्द्रवर्त्म, वंशस्थविलम्, प्रमिताक्षरा, पृथ्वी, मल्लिका, गंगोदक एवं कमल।

डॉ. किरणचन्द्र शर्मा ने रामचन्द्रिका में 39 छन्दों को खोजा है (ये ऊपर बताये छन्दों से अतिरिक्त हैं।)

रमण, प्रिया, गाहा, चतुष्पदी/चौपैया, नवपदी, आभीर, मालती, मदनमालिका, घनाक्षरी, तोमर, अमृतगति, दोधक, तोटक, पंकजवाटिका, निशिपालिका, सुप्रिया/शशिकला, मन्थान, मधु, बन्धु चौपाई/चौपई, ब्रह्मरूपक, स्रग्विणी, हाकलिका, मदनमोहन दण्डक, लवंगलता, मदनहरा, पंचचामर झूलना, जयकरी, मकरंद सवैया, मरहट्टा, हरिलीला, धीर, उपजाति, गौरी, रूपक्रान्ता सुगीत, सिंहविलोकित एवं मनहरन (इस प्रकार 'रामचन्द्र की

चन्द्रिका वरनत हौं बहुछन्द्रद, का निर्वाह करते हुए केशव ने रामचन्द्रिका में 121 प्रकार के छन्दों को प्रयुक्त किया है।)

'वीरसिंह देव चरित' में मात्रिक 7 एवं वर्णिक 5 – 12 प्रकार के छन्द हैं।
'विज्ञान गीता' में मात्रिक 13 एवं वर्णिक 20 – 33 प्रकार के छन्द हैं।
'रतन बावनी' में मात्रिक 03 प्रकार के छन्द हैं।
जहाँगीरजस चन्द्रिका में मात्रिक 06 एवं वर्णिक 4 – 10 प्रकार के छन्द हैं।

निःसन्देह अभी तक उपलब्ध किसी भी संस्कृत अथवा हिंन्दी के महाकाव्य में इतने अधिक छन्द नहीं देखे गये हैं। केशव ने एकाक्षरी से लेकर अष्टाक्षरी तक क्रमशः अपने छन्द कौशल की झलक 'रामचन्द्रिका' के आरंभ में ही प्रस्तुत कर दी है। (रामचंन्द्रिका 1/8–16)

केशव को प्रसंगानुसार छन्द चयन में प्रावीण्य प्राप्त है। वानरी सेना की विशालता में 'त्रिभंगी' सेना के प्रयाण में 'हीरक' घोड़े के वर्णन में 'चंचला' श्रीराम को शयन से जगाने के लिए 'हरिप्रिया' वीर भाव या क्रोध के अवसर पर छप्पय श्रृंगार के प्रसंग में सवैया आदि छन्दों को यथा स्थान देखा जा सकता है।

(कहीं–कहीं यतिभंग, मात्रादोष अवश्य आ गये हैं, (किन्तु ऐसा प्रायः महाकवियों की रचना में देखा जाता है, जो कि नगण्य प्राय हैं।)

प्रकृति वर्णन

प्रकृति और काव्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्रकृति के मुख्य उपादानों के विषय में केशव की मान्यता है:–

''देस नगर बन बाग गिरि आश्रम सरिता ताल।
रवि ससि सागर भूमि के भूषण रितु सबकाल।।''

(कविप्रिया)

केशव ने प्रकृति का आलम्बन, उद्दीपन, आलंकारिक, बिम्ब–प्रतिबिम्ब, परिगणनात्मक एवं उपदेशात्मक रूप में वर्णन किया है। प्रत्येक के उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(1) आलम्बन रूप में प्रकृति

आलम्बन रूप में प्रकृति कवि के लिए साध्य है, साधन नहीं। प्रकृति के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर कवि प्रकृति चित्रण के लिए विवश हो जाता है।महाराज दशरथ की वाटिका का वर्णन देखिए :—

''देखि देखि अनुराग उपज्जिय,
बोलत कल ध्वनि कोकिल सज्जिय,।
राजति रति की सखी सुवेषनि
मनहुँ बहत मनमथ संदेशनि।।
फूलि फूलि तरु फूल बढ़ावत
मोदत महा मोद उपजावत।
उड़त पराग न चित्त उड़ावत
भ्रमर भ्रमत नहिं जीव भ्रमावत।।
सुभ सर शोभै, मुनि मन लोभै।
सरसिज फूले, अलिरस भूले।।
जल चर डोलैं, बहु खग बोलैं।
बरणि न जाहीं, उर उरझाहीं।।''

(रामचन्द्रिका 1/30—33)

शरद आदि के वर्णन भी इसी श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

(2) उद्दीपन रूप में प्रकृति

मनुष्य की संयोग—वियोग की स्थितियों में प्रकृति उद्दीपक का कार्य करती है।
श्रीराम की विरह दशा को प्रकृति किस प्रकार उद्दीप्त कर रही है, एक उदाहरण देखिए

''हिमांशु सूर सो लगै सो बात बज्र सी बहै।
दिशा जगैं कृशानु ज्यों विलेप अंग को दहै।
बिसेस कालराति सों कराल राति मानिये
वियोग सीय को न काल लोकहारा जानिये।।''

(रामचन्द्रिका, 22/42)

आलंकारिक रूप में प्रकृति

अलंकारवादी होने के कारण केशव के काव्य में प्रकृति के इस रूप में मनोहर वर्णन प्राप्त होते हैं। सीता मुख वर्णन के प्रसंग में श्लेष, उपमा, अनन्वय आदि अलंकार देखते ही बनते हैं–

''वासों मृग अंक कहैं तोसौं मृगनैनी सब
वह सुधाधर तुहूँ सुधाधर मानिये।
वह द्विजराज तेरे द्विज राजि राजै, वह
कलानिधि तुहूँ कला कलित बखानिये।
रत्नाकर के हैं दोऊ केशव प्रकासकर
अंबर बिलास कुवलय हितु मानिये।
वाके अति सीतकर तुहूँ सीता सीतकर
चन्द्रमा सी चन्द्रमुखी सब जग जानिये।।''

x x x x

''कलित कलंक केतु केतु अरि सेत गात
भोग योग को अयोग रोग ही को थल सो।
पून्योई को पूरन पै आन दिन ऊनो ऊनो
छन छन छीन होत छीलर के जल सो।
चन्द्र सो जो बरनत रामचंद्र की दुहाई
सोई मतिमंद कवि केसव मुसल सो
सुंदर सुवास अरु कोमल अमल अति
सीता जू को मुख सखि केवल कमल सो।।''

(रामचन्द्रिका 9/40, 41)

''सीता नयन चकोर सखि रविवंशी रघुनाथ।
रामचन्द्र सिय कमल मुख भलो बन्यो है साथ।।''

(रामचन्द्रिका 9/43)

(अनेक टीकाकारों ने इस दोहे में विरोधाभास अलंकार मानकर, इसके साथ अन्याय किया है। केशव के पाण्डित्य का यह अप्रतिम उदाहरण है। यहाँ वस्तुतः यथासंख्य अलंकार है। इसी अलंकार के माध्यम से यहाँ चमत्कार आ रहा है।)

बिम्ब प्रतिबिम्ब रूप में प्रकृति

प्रकृति एवं मानव भावों के तादात्म्य में कवि प्रतिबिम्ब रूप में अपने ही भावों को देखने लगता है। यही बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव है। कवि–मानस में स्थित सौंदर्य प्रकृति में इस प्रकार दिखायी दे रहा है –

''दन्तावलि कुन्द समान गनो। चन्द्रानन कुन्तल भौंर घनो।
भौंहे धनु खंजन नैन मनो। राजीवनि ज्यों पद पानि भनो।
हारावलि नीरज हीय रमैं। जनु लीन पयोधर अम्बर मैं।
पाटीर जुह्नाइहि अंग धरै। हंसी गति केसव चित्त हरै।।''

(रामचन्द्रिका 13/24–25)

परिगणनात्मक रूप में प्रकृति

इस रूप में कवि केवल नामग्रहण परिपाटी द्वारा प्रकृति चित्रण करता है। प्रकृति के इस वर्णन में प्रायः वृक्ष, पशु आदि के नामों का ही परिचय होता है, यथा–

''तरु तालीस तमाल ताल हिन्ताल मनोहर।
मंजुल बंजुल तिलक लकुच कुल केर नारियर।
एला ललित लवंग संग पुंगीफल सोहैं।
सारी सुककुल कलित चित्त कोकिल अलि मोहै।
सुभ राजहंस कलहंस कुल नाचत मत्त मयूर गन।
अति प्रफुलित फलित सदा रहै केसवदास बिचित्र बन।।''

(रामचन्द्रिका 3/1)

उपदेशात्मक रूप में प्रकृति

किसी विशेष तथ्य या विचार को जब प्रकृति के माध्यम से कवि प्रकट करता है, तब उक्त श्रेणी का विशिष्ट प्रकृति वर्णन होता है। चन्द्रमा के पश्चिम दिशा के अभिलाष से ब्राह्मण के मदिराभिलाष की झलक और उसके परिणाम का कितना सुंदर वर्णन है–

''नहीं वारुणी की करी रंचक रुचि द्विजराज।
तहीं कियो भगवन्त बिन सम्पति सोभा साज।।''

(रामचन्द्रिका 5/14)

(वारुणी और द्विजराज में श्लेष द्वारा अर्थ किया जाना चाहिए।)

केशव के काव्य में रस परिपाक

'रस काव्य की आत्मा है' श्रृंगारादि भेद से रस आठ से लेकर ग्यारह तक की श्रेणी में आता है। दूसरे अर्थ में काव्य से प्राप्त होने वाला सहृदय संवेद्य आनन्द भी रस की श्रेणी में आता है। वस्तुतः काव्य का प्रयोजन यही रस है– ''सकलप्रयोजन मौलिभूतं, समनन्तरमेव रसास्वादनसमुद्भूतं विगलितवेद्यान्तरमानन्दम्।'' (आचार्य मम्मट) यहाँ नव रसों का एक–एक उदाहरण देखकर, काव्यानंद की चर्चा की जाएगी।

श्रृंगार के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों के उदाहरण प्रभूत मात्रा में उपलब्ध हैं। दिङ्.मात्र उदाहरण दिया जा रहा है–

संयोग श्रृंगार

''कहुँ बाग तड़ाग तरंगिनी तीर तमाल की छाँह बिलोकि भली
घटिका यह बैठत हैं सुख पाय बिछाय तहाँ कुस काँस थली।
मग को श्रम श्रीपति दूर करैं सिय को शुभ बाकल अंचल सों
श्रम तेऊ हरैं तिनको कहि केशव चंचल चारु दृगंचल सों।।''

(रामचन्द्रिका 9/44)

वियोग/विप्रलम्भ श्रृंगार

''हिमांशु सूर सो लगै सो बात बज्र सी बहै
दिशा जगैं कृसानु ज्यों विलेप अंग को दहै।
बिसेस कालराति सों कराल राति मानिये
बियोग सीय को न, काल लोकहार जानिये।।''

(सीता वियोगी श्रीराम का लक्ष्मण के प्रति कथन)
रामचन्द्रिका 12/42

हास्य

''आई है एक महाबन तें तिय गावत मानों गिरा पगुधारी
सुन्दरता जनु काम की कामिनी बोलि कह्यो बृषभानु दुलारी।
गोपि कै लाई गोपालहि वै अकुलाई मिली उठि सादर भारी
केशव भेंटत ही भरि अंक हँसी सब कीक दै गोप कुमारी।।''

(रसिकप्रिया, छन्द 16)

करुण

''हा राम! हा रमण! हा रघुनाथ धीर,
लंकाधिनाथ बश जानहु मोहि वीर।
हा पुत्र लक्ष्मण। छुड़ावहु बेगि मोहीं
मार्तंडवंश यश की सब लाज तोहीं।।''

(रामचन्द्रिका, 12/22)

रौद्र

''भगन कियो भवधनुष साल तुमको अब सालौं
नष्ट करौं विधि सृष्टि ईश आसन ते चालौं।
सकल लोक संहरहुँ सेस सिरते धर डारौं
सप्तसिंधु मिलि जाहिं होइ सबही तम भारौं।
अति अमल जोति नारायणी कह केशव बुझि जाय बर।
भृगुनंद संभारु कुठार्र मैं कियो सरासन युक्त सर।।''

(परशुराम के प्रति राम की उक्ति)

रामचन्द्रिका 7/42

वीर

''न हौं ताड़का, हौं सुबाहौ न मानो,
न हौं शम्भु कोदण्ड, साँची बखानो।
न हौं ताल, बाली, खरै, जाहि मारो,
न हौं दूषणैं, सिंधु, सूधै निहारो।
सुरी आसुरी सुन्दरी भोग कर्णै
महाकाल को काल हौं कुम्भकर्णै।
सुनौ राम! संग्राम को तोहि बोलौं
बढ़ो गर्व लंकाहि आये सु खोलौं।।''

(कुम्भकर्ण की श्रीराम के प्रति उक्ति)

रामचन्द्रिका 18/22, 23

भयानक

''भूतल सकल भ्रमित ह्वै गयौ। लोक लोक कोलाहल भयौ।

x x x x

धर्मराज के धकपक भई। दण्डनीति कुम्भज कौं दई।

चिन्ता तरुन बरुन कर गुनी। तबही उतरि गई बारुनी।''

(वीरसिंह की सेना के प्रयाण पर इन्द्र की दशा)

'वीरसिंह देवचरित' 15–19 छन्द

बीभत्स

''माता ही को मांस तोहि लागत है मीठो मुख

पियत पिता को लोहू नेक न छिनाति है।

x x x x

प्रेतिनी पिसाचिनी निसाचरी की जाई है तू

केसौदास की सौं कहि तेरी कौन जाति है।''

(रसिकप्रिया, 31)

अद्‌भुत

''केसौदास बाल वैस दीपति तरुनि तेरी

बानी लघु बरनत बुधि परमान की।

कोमल अमल उर उरज कठोर जाति

अबला पै बलबीर बन्धन विधान की।

चंचल चितौनि चित अचल सुभाव साधु

सकल असाधु भाव काम की कथान की।

बेचति फिरति दधि लेत तिन्हें मोल लेत

अद्‌भुत रसभरी बेटी बृषभान की।।''

(राधावर्णन 'रसिकप्रिया', 34)

शान्त

''आजु आदित्य जल पवन पावक प्रबल

चंद आनंदमय, त्रास जग को हरौ।

गान किन्नर करौ, नृत्य गन्धर्वकुलं

यक्ष विधिलक्ष उर, यक्षकर्दम धरौ।।

ब्रह्म रुद्रादि दै देव तिहुँ लोक के
राज को जाय अभिषेक इन्द्रहिं करौ।
आजु सिय राम दै, लंक कुलदूखणहिं
यज्ञ को जाय सर्वज्ञ विप्रहु बरौ।।''

(रावण की उक्ति, मेघनाद की मृत्यु के बाद)

रामचन्द्रिका 19/3

'रतिर्देवादिविषया व्यभिचारी तथाञ्जितः भावः प्रोक्तः' के अनुसार देवादि विषयारति 'भाव' मानी जाती है। इस दृष्टि से भगवान् श्रीराम की वन्दना में केशव का यह पद द्रष्टव्य है :

''पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परिपूरण बतावैं न बतावैं और उक्ति को।
दरशन देत जिन्हें दरशन समुझैं न, नेति नेति कहैं वेद छाँड़ि आन युक्ति को।
जानि यह 'केसौदास' अनुदिन राम राम रटत रहत न डरत पुनरुक्ति को।
रूप देहि अणिमाहि गुण देहि गरिमाहि भक्ति देहि महिमाहि नाम देहि मुक्ति को।।''

(रामचन्द्रिका 1/3)

उपसंहार

केशव की प्रवृत्ति है संस्कृत, प्रकृति भी संस्कृत है। विवशता है भाषा (हिंदी)। अधिकांश प्रसंग 'प्रसन्नराघव', 'हनुमन्नाटक', 'अनर्घराघव', 'कादम्बरी', 'नैषधीयचरित' से प्रभावित हैं, कहना चाहिए रूपान्तर मात्र हैं। कुछ तुलनात्मक अंश दिये जाते हैं :

1. ''स्वां स्वां दिशं श्रितवतां निवहेन राज्ञां मंचावलीवलयमाकलितं विभाति।
सीता स्वयंवर विलोकन कौतुकेन पुंजीकृताकृति दिशामिव चक्रवालम्।।''

(प्रसन्न राघवम्, प्रथम अंक)

''ता महँ केसवदास विराजत राजकुमार सबै सुखदाई
देवन स्यों जनु देवसभा सुभ सीय स्वयंवर देखन आई।।''

(रामचन्द्रिका 3/15)

2 ''आद्वीपात् परतोप्यमी नृपतयः सर्वे समभ्यागताः
कन्येयं कलधौतकोमलरुचिः कीर्तिश्च लाभास्पदम्।
नाकृष्टं न च टात्कृतं न नमितं स्थानाच्च न त्याजितं
केनापीदमहो धनुः किमधुना निर्वीरमुर्वीतलम्।।''

(प्रसन्न राघवम् 1/32)

''काहू चढ़ायो न काहू नवायो न
काहू उठायो न आंगुर हू द्वै।''

(रामचन्द्रिका 3/34)

3 ''अंगैरंगीकृता यत्र षड्भिः सप्तभिरष्टभिः।
त्रयी च राजलक्ष्मीश्च योगविद्या च दीव्यति।।''

(प्रसन्नराघवम् 3/7)

''अंग छ सातक आठक सों भव तीनिहुँ लोक मैं सिद्धि भई है।
वेदत्रयी अरु राजसिरी परिपूरनता सुभ योगमयी है।''

(रामचन्द्रिका 5/19)

4 ''यः कांचनमिवात्मानं निक्षिप्याग्नौ तपोमये।
वर्णोत्कर्षं गतः सोऽयं विश्वामित्रो मुनीश्वरः।।''

(प्रसन्नराघवम् 3/8)

''जिन अपनो तन स्वर्ण मेलि तपोमय अग्नि मैं।
कीन्हौ उत्तमवर्ण तेई विश्वामित्र ये।।''

(रामचन्द्रिका 5/20)

5 ''छत्रच्छाया तिरयति न यद्यन्न च स्प्रष्टुमीष्टे
दृप्यद्गन्धद्विपमदमषीपंकनामा कलंकः।
लीलालोलः शमयति न यच्चामराणां समीरः
स्फीतं ज्योतिः किमपि तदमी भूभुजः शीलयन्ति।।''

(प्रसन्नराघवम् 3/12)

''सब छत्रिन आदि दै काहू छुई न छुए बिजनादिक बात डगै।
न घटै न बढ़ै निसिबासर केसव लोकन को तम तेज भगै।।
भवभूषनभूषित होत नहीं मदमत्त गजादि मसी न लगै।
जलहूँ थलहूँ परिपूरन श्री निमि के कुल अद्भुत जोति जगै।।''

(रामचन्द्रिका 5/22)

6 ''इदमस्मत्प्राचीनेषु शोभते, न तु मयि कतिपय ग्रामटिका स्वामिनि।''

(प्रसन्नराघवनम् 3)

''यह कीरति और नरेसन सोहै, सुनि देव अदेवन को मन मोहै।
हम को बपुरा सुनिए ऋषिराई, सब गाउँ छः सातक की ठकुराई।।''
(रामचंद्रिका 5/23)

7 ''अवनिमवनिपालाः संघशः पालयन्ता मवनिपतियशस्तु त्वां विना नापरस्य।
जनक! कनकगौरीं यत्प्रसूतां तनमजां जगति दुहितृमन्तं भूर्भवन्तं वितेने।।''
(प्रसन्न राघवम् 3/13)

''आपने आपने ठौरनि तौ भुवपाल सबै भुव पालैं सदाई।
केवल नामहि के भुवपाल कहावत हैं भुव पालि न जाई।।
भूपति की तुमही धरि देह विदेहनि मैं कल कीरति गाई।
केसव भूषन को भुविभूषन भूतन ते तनया उपजाई।।''
(रामचन्द्रिका 5/24)

8 ''एतत्तद्दुर्विगाहं तुहिन गिरिमयं कार्मुकं यत्र जज्ञे
मौर्वी दर्वीकराणां पतिरुदधिसुतानायकः सायकश्च।
दोर्दण्डैश्चन्द्रमौलेर्नतमपि यदभूदुन्नतं कार्मुकाणां
वाष्पांभो वृष्टये च त्रिपुरमृगदृशामैशमप्यैन्द्रमासीत्।।''
(प्रसन्न राघवम् 3/30)

''वज्र ते कठोर है कैलास ते विशाल कालदंड ते कराल सब काल काल गावई।
केशव त्रिलोक के बिलोकि हारे देव सबै छोड़ चन्द्रचूड़ एक और को चढ़ावई।।
पन्नग प्रचण्डपति प्रभु की पनच पीन पर्वतारि पर्वत प्रभा न मान पावई।
विनायक एकहू पै आवै न पिनाक ताहि कोमल कमलपानि राम कैसे लावई।।''
(रामचन्द्रिका 5/36)

9 ''भिन्दन्निद्रां मुरारेः सकल भुजभृतां म्लानयन् शौर्यदर्पम्
छिन्दन् दिक्कुंभिकर्णांचलचलनकलां कम्पयन् कूर्मराजम्।
आर्यश्लाघागभीरः प्रलय जलधरध्वानधिक्कारधीर
ष्टाड्कारः कृष्यमाणत्रिपुरहरधनुर्भंगभूराविरस्ति।।''
(प्रसन्नराघवम् 3/45)

''प्रथम टंकोर झुकि झारि संसारमद चंडकोदंड रह्यौ मंडि नव खंड को।
चालि अचला अचल घालि दिगपाल बल पालि ऋषिराज के बचन परचंड को।।

सोधु दै ईसको बोधु जगदीस को क्रोध उपजाइ भृगुनंद बरिबंड को।
बाधि बर स्वर्ग को साधि अपवर्ग धनुभंग को सब्द गयो भेदि ब्रह्नंड को।।''

(रामचन्द्रिका 5/43)

10 ''मौर्वी धनुस्तनुरियं च बिभर्ति मौज्जीं बाणाः कुशाश्च विलसन्ति करे सितायाः।
धारोज्ज्वलः परशुरेष कमण्डलुश्च तद्वीर शांतरसयो किमयं विकारः।।

(प्रसन्न राघवम् 4/15)

''कुसमुद्रिका समिधै स्रुवा कुस औ कमण्डल को लिये
करमूल सर धनु तर्कसी भृगुलात सी दरसै हिये।
धनुबाण तिच्छ कुठार केसव मेखला मृगचर्म सों
रघुवीर! को यह देखिये रस वीर सात्त्विक धर्म सों।।''

(रामचन्द्रिका 7/15)

11 ''मातस्तातः क्व यातः? सुरपतिभवनं, हाकुतः? पुत्र शोकात्
कोऽसौ पुत्रश्चतुर्णां? त्वमवरजतया, यस्य जातः किमस्य?
प्राप्तोऽसौ काननान्तं किमिति? नृपगिरा किन्तयासौ बभाषे?
मद्वाग्बद्धः फलंते किमिह? तवधराधीशता हा हतोऽस्मि।''

(प्रसन्नराघवम् 5/18)

''मातु कहाँ नृप? तात गये सुरलोकहि, क्यों? सुतशोक लये
सुत कौन सु? राम, कहाँ है अबै? बन लच्छमन सीय समेत गये।
बन काज कहा कहि? केवल मो सुख तो को कहाँ सुख यामे भये?
तुमको प्रभुता, धिक तोकों कहा अपराध बिना सिगरेई हये।।''

(रामचन्द्रिका 10/4)

संदर्भ ग्रंथ

1. केशव की काव्य चेतना, डॉ. विजयपाल सिंह, राजपाल एंड संस दिल्ली, 1976
2. केशव सुधा, डॉ. विजयपाल सिंह, राजपाल एंड संस दिल्ली, 1972
3. केशव की काव्यकला, डॉ. शंकर वसन्त मुद्गल, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, 1997
4. विश्वसंस्कृतम्, साधुआश्रम, होश्यापुर, पंजाब, जून, 1985
5. आचार्य केशवदास, डॉ. हीरालाल दीक्षित
6. केशवदास : जीवनी कला और कृतित्व, डॉ. किरण चन्द्र शर्मा
7. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
8. प्रसन्नराघवम्, जयदेव
9. रामचन्द्रिका, केशव, रामनारायणलाल बेनीमाधो, इलाहाबाद, 2018 विक्रमी
10. काव्यप्रकाश, आचार्य मम्मट, निर्णय सागर प्रेस, बंबई
11. रसिकप्रिया, केशव
12. बीसिंहदेवचरित, केशव